Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मालती जोशी की कहानियों में नारी संवेदना

डॉ. मंजुलता चौधरी*

* सह. प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, आलोट, जिला रतलाम (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – हिन्दी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाने वाली मालती जोशी का जन्म 4 जून 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर के एक मध्यमवर्गीय मराठी परिवार में हुआ था। इनके पिता सरकारी नौकरी में मजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे। इनका स्थानान्तरण होता रहता था जिसका प्रभाव इनके बच्चों की पढाई पर पडा। मालती जोशी अपने बचपन के बारे में बताते हुए कहती है कि उन दिनों जीव बहुत सामान्य था आवश्यकता थोडी थी। इसलिए बिना किसी समस्या के बचपन गुजर गया। इनका परिवार खुशहाल था पर धनाड्य नही था। इनके पिता साहित्य प्रेमी थे उन्होनें चार पॉच कहानियॉ भी लिखी थी। मालती जोशी के परिवार का वातावरण पढने लिखने की परम्परा का था। इसलिए इन्हें बचपन से ही लिखने का शोक था।

अपने छात्र जीवन से ही मालती जोशी साहित्य के क्षेत्र में लोकप्रिय हो गई थी वे बताती है कि छात्र जीवन में गीतकार के रूप में काफी लोकप्रियता अर्जित की थी। लोग इन्हें मालवा की मीरा कहने लगे थे। कवि सम्मेलनों में बहुत प्रशंसा मिलती थी फिर गीतों का यह स्त्रोत सुख गया और मैंने तब कई विद्याओं में हाथ आजमाया। रेडियों के लिए झलकियॉ लिखी। व्यंग्य वातिएं लिखी। बच्चों के लिए कहानियॉ लिखी। 60 के दशक की अधिकतर रचनाऐं मालती जी की होती थी इन रचनाओं ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

अपने लेखन के बारे में वह स्वयं बताती है कि लिख तो वे काफी समय से रही थी। परन्तु 70 के दशक में धर्मयुग साप्ताहिक पत्रिका में छपी उनकी एक कहानी ने उन्हें लेखन के क्षेत्र मे स्थापित कर दिया। इन्हें छुट पुछ कहानियॉ भी लिखी जो सरिता, निहारिका, लहर, कादम्बिनी, मनोरमा आदि में छपी। दैनिक अखबारों के रविवारीय अंकों में भी उनकी कहानियॉ छपती थी। 1979 में नवम्बर में धर्मयुग में छपी कहानी ने मुझे अखिल भारतीय मंच पर स्थापित कर दिया।

मालतीजी की कहानियों के शीर्षक सांकेतिक, रोचक और अर्थ बोधक रहते है। इनकी कहानियों में हमें बिखरते परिवारों को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता का बोध मिलता है। किसी भी वर्ग का व्यक्ति इनकी कहानियों से स्वंय को आत्मसात कर लेता है। मालती जोशी मूलत: रिश्तों की कथाकार है मध्यमवर्गीय परिवार इनकी कथा में मिलते है। संस्कारों से पूर्ण भारतीय नारी के सौन्दर्य, साहस और संवेदना को बडी ही खुबी से मालती जोशी ने अपनी कहानियों में उकेरा है।

मालतीजी के कथा साहित्य में आधुनिक युग की पढी लिखी नारी जो पुरूष प्रधान समाज में अपने अस्तित्व की खोज में लगी रहती है वह अपने परिवार के प्रति समर्पित होने के साथ साथ कर्तव्यनिष्ठ भी है। किन्तु जब उसके इस समपर्ण और त्याग को नजर अंदाज कर दिया जाता है तो वह निराष नहीं होती उसमें यह आशा रहती है कि मेरे इस त्याग ओर समर्पण को परिवार कभी तो समझेगा। इनकी कहानियॉ बेहद साधारण परिवेश से निकली है जो इनके नारी पात्र को असाधारण बनाती है। इनके नारी पात्र समस्या से जुझते हुए जिन्दगी जीते है किन्तु परिवार में कडवाहट नहीं घोलते वे कथा में जीवन को सहज, सरल बनाने का प्रयास करते है। मालती जी के नारी पात्र बगावत नहीं करते बल्कि वे जिन्दगी को सहज रूप से जीने की राह चुनने का प्रयास करते दिखाई देते है। यही पात्र रिष्तों के कारण आत्मसाात और सरल परिवेश का निर्माण करते है। यही मालतीजी की कहानियों की विशेषता भी है।

मालती जोशी ने प्रमुख रूप से कथा साहित्य ही लिखा है। जिसमें कहानी, उपन्यास ओर बाल साहित्य है। कहानी में मालती जोशी के लगभग दस कहानी संग्रह है। पाषाण युग (1976), मध्यांन्तर (1977), पटाक्षेप (1978), पराजय (1979), मन न भये दस बीस(1981), मालती जोशी की कहानियॉ (1985), बोल री कठपुतली (1985), एक घर सपनों का (1985), विश्वास गाथा (1985), आखरी शर्त (1991), मोरी रंग दी चुनरियॉ (1992), अंतिम संक्षेप (1994), एक सार्थक दिन (1995), शापित शैशव (1996), बाबुल का घर (1999), पिया पीर न जानी (1999), औरत एक रात (2001), रहिमन धागा प्रेम का, परख, वो तेरा घर ये मेरा घर, अपने अपने ऑगन की छॉव (2003) आदि।

इसी प्रकार मालतीजी ने उपन्यासो का भी सृजन किया:– समर्पण का सुख (1976), सहचारिणी (1979), शोभायात्रा (1985) इन्होने एक गीत संग्रह भी लिखा– मेरा छोटा सा अपनापन।

मालती जोशी की प्रमुख कहानी संग्रहों में नारी चित्रण

आखिरी शर्त– कहानी संग्रह में सात कहानियॉ है आखिरी शर्त, शुभकामना, कोउ न जाननहार, संवेदना, साथी, औकात, खेल खेल में। इस संग्रह की कहानियों में रूढियों से मजबूर नारी का चित्रण, परिवार के आंतक से त्रस्त नारी का चित्रण, विधवा नारी का तनावों से उभरते सुख का चित्रण, बुढापे तक एक दुसरे के साथ का चित्रण, अर्थाभाव के कारण परिवार की ओर से अन्याय और अपमान का चित्रण इस कहानी संग्रह के प्रमुख कथ्य है।

मोरी रंग दी चुनरिया– इस कहानी संग्रह में चार कहानियॉ है। सती, मोरी रंग दी चुनरियॉ, यातना चक्र, आखिरी सौगात, आदि। इन कहानियॉ में मालतीजी ने नारी की मानसिकता का चित्रण किया है। जो विधवा स्त्री के साथ हमेशा होत रहता है। सती कहानी में नीलम का पति एक अज्ञात बिमारी

से ग्रसित है। इस कारण घर का वातावरण अच्छा नहीं है। नीलम अपने पति की दिन रात सेवा करती है। एक दिन जब नीलम की विधवा भाभी उससे मिलने आती है तब उसे पता चलता है कि परिवार वाले उसके विधवा होने पर उसे यातना देते है और उस पर अत्याचार करते हैं। हमारे समाज में विधवा होने पर, होने वाले आत्यचार और अन्याय को जानकर नीलम डर जाती है। उसे लगता है के अगर उसके पति को कुछ हो गया तो उसके साथ भी यह सब होगा। यह सोच कर नीलम आत्महत्या का निणय ले लेती है। कोउ न जाननहार में विधवा नारी की संवेदना को बताया है जो अपने ही माता पिता के घर में सब कुछ न्योछावर कर देती है उसे अपने ही परिवार में मॉ की घृणा, तिरस्कार, स्वार्थ के अलावा कुछ नहीं मिलता। इसी प्रकार संदर्भहीन कहानी में शोभा की व्यथा का चित्रण है जो विधवा होने के उपरान्त भी खोखली जिन्दगी जीने को मजबूर है। शोभा की मन: स्थिति भी ऐसी हो जाती है कि वह किसी का प्यार करना भी सहन नहीं कर पाती है। इस कारण वह अजनबी लोगों के बीच रहने की चाह रखती है।

बोल री कठपुतली– इस कहानी संग्रह में नौ कहानियॉ है। प्रश्नों के भंवर, अक्षम्य, सन्नाटा, हमको दियो परदेस, परायी बेटी का दर्द, बोल री कठपुतली, रानियॉ, आवारा बादल, कोख का दर्प आदि। ये कहानियॉ नारी शिक्षा की समस्या को लेकर लिखी गयी है। सन्नाटा और रानियॉ कहानी में आधुनिक परिवेश में नारी की अधिक शिक्षा के कारण उत्पन्न होने वाली समस्या का चित्रण मिलता है। प्रश्नों के भंवर में अनमेल विवाह का चित्र प्रस्तुत किया गया है। जिसमें सुनील की पत्नी का मानसिक स्तर से जूझने की स्थिति का चित्रण है। अक्षम्य कहानी में श्याम अपनी पत्नी बिन्दु को अयोग्य मानकर उससे तलाक लेकर गीता से शादी कर लेता है। उसके बाद भी वह दुखी ही रहता है। परायी बेटी का दर्द कहानी में गीता उसके पति की ना पसन्द पत्नी है और गीता को नापसंद बनकर रहना अच्छा नहीं लगता है। इस कारण वह खुदकुषी कर लेती है। टूटने से जुडने तक, कुहासे, मन धुऑ, साथी, कल्चर आदि कहानियों में मालती जोशी ने दाम्पत्य जीवन जीने वाली नारी की मन: स्थिति का चित्रण किया है।

अंतिम संक्षेप– इस कहानी संग्रह में आठ कहानियॉ है। अंतिम संक्षेप, क्षरण, मान–अपमान, छीना हुआ सुख, अपने अपने दायरे, सन्नाटा ही सन्नाटा आदि। इन कहानियों में बुढापे की समस्या का चित्रण मिलता है। अंतिम संक्षेप में पति पत्नी के झगडें में मॉ को दोशी बताया जाता है। जिससे मॉ अपने बेटे के घर से चली जाती है और बेअे के लिए अपने घर के दरवाजे हमेशा के लिए बनद कर देती है। क्षरण कहानी में विमलजी सेवानिवृत्त होकर बेटे के घर रहने आती हैं किन्तु उसे अपने बेटे के घर परायों जैसा व्यवहार मिलता है इस कारण वह तनाव ग्रस्त माहौल में अपना जीवन व्यतीत करती है। मान अपमान कहानी में मॉ अपना पुरानी कामवाली को घर लाती है। जिसने उसके पुत्र को ग्यारह साल तक अपने पुत्र की तरह पाला। वही बेटा डिप्टी हो जाता है मॉ जब अपनी बहु से उस कामवाली के पैर छुने को कहती है तो उसे अपमान लगता है और वह यह सारी बाते अपने पति को कहती है। बेटा मॉ से कहता है कि आपकी बहु अमीर परिवार की है वह काम वाली के पैर नहीं छुएगी। इस प्रकार जिसने ग्यारह वर्षो तक उसे अपने बेटे की तरह पाला वह उसका अपमान करके चला जाता है।

इसी प्रकार मालतीजी के अन्य संग्रह जैसे औरत एक रात है, बाबुल का घर, हादसे और होसले, मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियॉ, मिलियन डॉलर नोट तथा अन्य कहानियॉ। इन सब कहानियों में मालतीजी ने नारी के प्रत्येक रूप का चित्रण किया है। मालतीजी ने जिस प्रकार से नारी का चित्रण किया है वह पाठको के मन की गहराई में उतर जाता है।

मालतीजी की कहानियॉ सजग और परिवारिक होते हुए भी समाज को बडा संदेष देती है। इनकी अधिकतर कहानियॉ नारी प्रधान है। इनकी नारी अबला नहीं है वे स्वच्छन्द, शहरी, कामकाजी और यथार्थ के धरातल पर जीने वाली है। मध्यम वर्गीय परिवारों की आम समस्याऍ, दैनिक जीवन की जद्दोजहद और मन के भावों को बहुत हीं संवेदनशील अंदाज में प्रस्तुत करना मालती जोशी की खासियत रही है। इन्होनें लेखन के प्रति अपने सभी दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा से किया है। मालती जोशी ने अपनी कहानियों में स्त्री के मन की थाह ली है मध्यम वर्गीय परिवार की कथा कहते हुए स्त्री मन, उसके संघर्ष, उसकी जीजिवशा और उसकी शक्ति का सबको परिचय कराती है। यही कारण है कि पाठक इनकी कहानियों से जुड जाता है। मालती जी नारी के चित्रण में मनोवैज्ञानिक कथाकार भी है।

मालतीजी की कहानियों हमारी जिन्दगी के आस पास के ताने बाने से बुनी है इस कारण पाठको को अपनी सी लगती है। इनकी कहानियॉ सामाजिक संदेश देने के साथ साथ जीवन को किस प्रकार जिया जाए का संदेष भी देती है मानवीय संवेदना के सूक्ष्मतम स्पन्दनों को अपने शब्दों में बॉधने की क्षमता रखने वाली मालती जोशी अपनी सहज प्रवाहमयी भाषा शैली के माध्यम से पाठकों के मन की गहराई में उतर जाती है। मालतीजी की कहानियॉ समाज के हर वर्ग के लिए हैं जीवन की छोटी छोटी अनुभूतियों को मालतीजी ने अपनी कहानी में स्थान दिया है। वह कहती है :– कि मैंने रमणीय क्षणों व छोटी छोटी अनुभूतियों को कहानियों में पिरोया है ये अनुभूतियॉ कभी अपनी तो कभी अपनों कह रही है। आपने अपने आस पास बिखरे जगत के सुख दुख को अपना मान कर कहानियों में बताया है इस कारण इनकी अधिकतर कहानियॉ मैं से शुरू होती है।

मालतीजी ने अपनी कहानियों मे नारी का चित्रण बहु, बेटी, पत्नी, प्रेमिका, मॉ, भाभी, बुआ, सास आदि रूपों किया है इनकी कहानियों में नारी स्वतन्त्रता का पक्षधर है। हन्होंन नारी के दर्द का कुशल चित्रण किया है। उनकी कहानियों की नारी अविवाहित, सामाजिक, आर्थक, पारिवारिक स्तर पर जुझती हुई मिलती है

मालतीजी ने एक इन्टरव्यू में स्वयं कहा था हिन्दी साहित्य में देह का विमर्श और बोल्डनेस बढ गया है। किन्तु मैं पारिवारिक कहानियॉ कहती हूॅ उन्होने कहा थ कि नारी कहानियों में आपको कहीं बेडसीन नहीं मिलेगा, मैं जितना परहेज अपने बहु बेटे के कमरे में जाने से करती हू उतना ही अपने पात्रों के बेडरूम में जाने से करती हू। वे साफ कहती है कि नारीवाद के नाम पर हमेषा नारेबाजी होती है। उसके बजाए विनम्रता से भी सित्रयों का पक्ष रखा जा सकता है।

मालतीजी की कहानियॉ संवाद शैली में है जिसमें जीवन की मार्मिक संवेदना, दैनिक जीवन के क्रिया कलाप और वातावरण की बडी सुघडता से चित्रण मिलता है हिन्दी साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोडने वाली मालती जी ने अपनी कहानियों में नैतिकता को स्थापित करने मे सहयोगी रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियॉ, प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली।
2. प्रतिनिधि कहानियॉ किताबघर, प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. इन्टरनेट।